Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JUNE-JULY, 2021, VOL-9/46
https://doi.org/10.21922/srjhsel.v9i46.1537

सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा कार्य संतुष्टि पर लेख

श्रीमती जागृति विश्वकर्मा[1] & दिनेश कुमार मौर्य[2], Ph. D.
[1]शोधछात्रा, सिद्धार्थविश्वविद्यालय ,कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर (उ० प्र०)
[2]असि० प्रो०, शिक्षाशास्त्र, एम०एल०के० (पी० जी०) कॉलेज , बलरामपुर (उ० प्र०)

Paper Received On: 25 JULY 2021
Peer Reviewed On: 31 JULY 2021
Published On: 1 AUGUST 2021

Abstract

शिक्षा मनुष्य व समाज का दर्पण है। शिक्षा के द्वारा ही समाज अपनी सभ्यता एवं संस्कृति की रक्षा करता है और शिक्षा सभ्यता के रूप में इस संसार की उन्नति करने में सहायता करती है। शिक्षा का प्रथम पायदान प्राथमिक स्तर व द्वितीय पायदान उच्च प्राथमिक स्तर है। बालक प्राथमिक स्तर पर आधारभूत ज्ञान प्राप्त करके उच्च प्राथमिक स्तर में प्रवेश करता है। यह स्तर बालक के शिक्षा की नींव है, इसके उपरांत ही शिक्षा रूपी दृढ़ स्थाई भवन का निर्माण हो पाता है। शिक्षण प्रभावशीलता तथा कार्य संतुष्टि उन शिक्षण संस्थाओं में अच्छा है जहां अध्यापकों की सेवा शर्तें सुरक्षित हैं। एक व्यक्ति के अध्यापक बनने के बाद उससे अपेक्षा की जाती है कि अध्यापक स्वयं को सतत् अद्यतन बनाए रखे। इस शोध लेख में सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा कार्य संतुष्टि के सम्बंध में अध्ययन किया गया है।

की–वर्ड– *सरकारी विद्यालय, गैर सरकारी विद्यालय, उच्च प्राथमिक विद्यालय, शिक्षण प्रभावशीलता तथा कार्य संतुष्टि*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य की अंतर्निहित शक्तियों का विकास है। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य अपनी शक्तियों को व्यवहार में लाता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य निरंतर सीखता रहता है। सीखने की इस प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप उसे अनुभव प्राप्त होता है। इन अनुभवों को व्यवहार में लाने का कार्य शिक्षा करती है। शिक्षा मनुष्य व समाज का दर्पण है। शिक्षा के द्वारा ही समाज अपनी सभ्यता एवं संस्कृति की रक्षा करता है और शिक्षा सभ्यता के रूप में इस संसार की उन्नति करने में सहायता करती है।

शिक्षा के मुख्य स्तर है– प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, उच्च व उच्चतर शिक्षा है। शिक्षा में इन सभी स्तरों का विशेष स्थान है। शिक्षा का प्रथम पायदान प्राथमिक स्तर व द्वितीय पायदान उच्च प्राथमिक स्तर है। बालक प्राथमिक स्तर पर आधारभूत ज्ञान प्राप्त करके उच्च प्राथमिक स्तर में प्रवेश करता है। उच्च प्राथमिक स्तर का स्थान प्राथमिक स्तर के समान महत्वपूर्ण है। यह स्तर बालक के शिक्षा की नींव है, इसके उपरांत ही शिक्षा रूपी दृढ़ स्थाई भवन का निर्माण हो पाता है।

शिक्षक वह अभिन्न अंग है, जो समाज को नवीन दिशा प्रदर्शित करने में तत्पर रहता है। शिक्षक द्वारा स्वस्थ समाज की रचना होती है। कोठारी कमीशन (1964–66) के प्रतिवेदन में यह लिखित है कि राष्ट्र निर्माण में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। देश के भविष्य का निर्माण कक्षाओं में होता

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

है, निःसंदेह जैसा शिक्षक होगा, वैसे ही उसके छात्र होंगे। उसी प्रकार का समाज बनेगा। आवश्यकता है, हमारी शिक्षा जन आकांक्षाओं एवं समाज की जरूरतों से जुड़ सकें। शिक्षा व्यवस्था अपने से सेवार्थियों में अपेक्षित दायित्व एवं मूल्य बोध विकसित कर सकें। हमारे देश में शिक्षकों की नियुक्ति उनकी अकादमिक डिग्री, डिप्लोमा और सेवा पूर्व प्रशिक्षण के आधार पर की जाती है। साथ ही व्यावसायिक विकास हेतु समय–समय पर उन्हें प्रशिक्षण दिया जाता है, किंतु फिर भी इनमें से अधिकांश अपने कार्य में उद्देश्यहीन दिखाई देते हैं।

पूर्व शोध का अध्ययन

अध्ययनोपरान्त सम्बंधित विषय निम्न शोधार्थियों द्वारा अध्ययन किया गया है ,जिससे यह ज्ञात होता है कि शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता एवं कार्य संतुष्टि को विभिन्न स्तर पर किस प्रकार अध्ययन किया गया है, इन अध्ययनों से यह ज्ञात हो सकेगा कि उच्च प्राथमिक स्तर पर किन उद्देश्य निर्धारित करने होंगे, जिससे यह ज्ञात हो सकेगा कि सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा कार्य संतुष्टि क्या होंगे?

पचौरी, दीप्ति (2014) ने मैनपुरी जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया। इन्होंने अपने शोध अध्ययन में निम्न उद्देश्य निर्धारित किया–

- सरकारी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
- सरकारी एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
- सहायता प्राप्त एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

अध्ययनोपरांत राजकीय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता उच्च पाई गई जबकि वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता सबसे निम्न पाई गयी।

यादव, सुमन लता (2015) ने ग्रामीण तथा शहरी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया। इन्होंनें अपने शोध अध्ययन में ग्रामीण तथा शहरी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता के अध्ययन को शोध का उद्देश्य निर्धारित किया।

अध्ययनोपरांत निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए कि–

- माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों में शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर पाया गया।
- शहरी परिवेश के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता ग्रामीण परिवेश के अध्यापकों की अपेक्षा अधिक पाई गयी। इसका प्रमुख कारण शहरी परिवेश में अध्यापक नवाचारों से अवगत अति शीघ्र होते हैं, साथ ही तकनीकी प्रगति शहरों में तीव्र गति से होने के कारण एवं शहरी विद्यालयों में सुविधाएं ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक होने के कारण शहरी शिक्षकों में शिक्षण प्रभावशीलता उच्च पाई जाती है।

जोशी, हरिमा एल. (2004) ने गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक तथा बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया। इन्होंने अपने शोध में बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक तथा बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की कार्य संतुष्टि में तुलनात्मक अध्ययन को शोध का उद्देश्य निर्धारित किया है। अध्ययनोपरांत निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए कि–

- बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की कार्य संतुष्टि एवं कार्य दबाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- बी.एड प्रशिक्षणार्थियों की कार्य संतुष्टि एवं उनकी व्यावसायिक जुड़ाव में सकारात्मक संबंध पाया गया।
- पुरुष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं व्यावसायिक जुड़ाव में सकारात्मक सार्थक संबंध पाया गया, ऐसे शिक्षक जो एकाकी परिवार से आते हैं उनकी व्यावसायिक जुड़ाव संयुक्त परिवार के शिक्षकों से अधिक पाया गया।

चंदेल, श्रीमती ममता (2007) ने सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि तथा स्वैच्छिक संप्राप्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। इन्होंने शोध अध्ययन में निम्न उद्देश्य बनाए हैं–

- सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के स्तर ज्ञात करना।
- सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के स्तर ज्ञात करना।
- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का स्तर ज्ञात करना।
- जातिगत भेद के अनुसार सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का स्तर ज्ञात करना।
- सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की संप्राप्ति का अध्ययन करना।
- सहायता प्राप्त गैर सहायता प्राप्त विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की संप्राप्ति का अध्ययन करना।
- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन करना।
- जातिगत भेद के अनुसार सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक संप्राप्ति का अध्ययन करना।

अध्ययनोपरांत निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए कि–

- सहायता प्राप्त महाविद्यालय के शिक्षक गैर सहायता प्राप्त की तुलना में अधिक संतुष्टि हैं।
- सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक संप्राप्ति लिंगायत आवासगत व जातिगत भेद की तुलना में प्राप्त परिणाम सहायता प्राप्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक संप्राप्ति गैर सहायता प्राप्त से अधिक है।

सिंह, जयप्रकाश (2013) ने उत्तर प्रदेश के स्ववित्तपोषित कॉलेजों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण दक्षता में संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन में इन्होंने निम्न उद्देश्य बनाएं।

- स्ववित्तपोषित कालेजों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षक दक्षता में तुलनात्मक अध्ययन करना।
- शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के स्ववित्तपोषित कालेजों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षक दक्षता में तुलनात्मक अध्ययन करना।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

- पी.जी.एम.एड. शिक्षक, प्रशिक्षकों तथा पी.जी.एम.एड. नेट/पी–एच.डी योग्यताधारी शिक्षक, शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं कार्य दक्षता में तुलनात्मक अध्ययन करना ।

अध्ययनोपरांत निम्न निष्कर्ष पाए गए कि–

- शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण दक्षता में संबंध सकारात्मक एवं सार्थक पाया गया।
- शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि व शिक्षक दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया ।
- पी.जी.एम.एड. तथा पी.जी.एम.एड. नेट / पी–एच.डी. योग्यताधारी शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं कार्य दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया ।

शिक्षण प्रभावशीलता

शिक्षण प्रभावशीलता की अवधारणा का संबंध शिक्षक के शिक्षण की प्रभावशीलता से है। अर्थात् एक शिक्षक अपने अध्यापन कार्य से अपने शिष्यों को किस प्रकार संतुष्ट कर पाता है। किसी भी शिक्षक की प्रभावशीलता का मापन उसकी शिक्षण प्रक्रिया से प्राप्त विद्यार्थी के संतुष्टि स्तर शिक्षार्थियों की सफलता का स्तर एवं विशिष्ट व शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के स्तर होते हैं। दूसरे शब्दों में, किसी शिक्षक के शिक्षण प्रक्रिया निर्धारित मानक आवश्यक कौशल एवं आवश्यक पर्यावरण से समन्वित होकर जो शिक्षण उपलब्धियां प्राप्त होती है।

शिक्षक की भूमिका शैक्षिक पर्यावरण में अत्यंत प्रभाव पूर्ण होता है। निश्चित समय, सामग्री, ऊर्जा, प्रयास व धन से वांछित परिणाम लाने हेतु एक शिक्षक की भूमिका को महत्वपूर्ण माना जाता है। शिक्षक के शिक्षण प्रभावशीलता के अंतर्गत कुशलता पूर्वक कार्य संपादन होना आवश्यक है। इसके अंतर्गत प्रशिक्षण की आवश्यकता व कार्य में अपेक्षित कौशल का विकास जरूरी है। शिक्षक का यही कौशल उसे अपने कार्य में पारंगत बनाता है अर्थात बिना किसी बाधा के वह शिक्षण कार्य को प्रभावशाली तरीके से निर्वहन करता है। शिक्षक जिस वातावरण में शिक्षण कार्य करता है, वहां उनके व्यवहार, संबंध सहयोग की भावना, स्नेह भाव आदि को प्रभावित करते हैं। यदि शिक्षक का वातावरण सकारात्मक है तो वह अच्छे भाव के साथ अपने कार्य को संपादित करने के लिए सकारात्मक विचार के साथ पूर्ण करने का प्रयास करता है।

कार्य संतुष्टि

वर्तमान अध्ययन में कार्य संतुष्टि का अर्थ व्यक्ति के कार्य के प्रति रुचि, उससे होने वाली आय की पर्याप्तता, सहपाठियों से संबंध, भावी उन्नति के अवसर, सेवा सुरक्षा की भावना, कार्य की सामाजिक प्रतिष्ठा, कार्य के लिए प्रोत्साहन कार्य संतुष्टि का निर्धारण करता है। कार्य संतुष्टि दो शब्दों से मिलकर बना है, पहला है कार्य और दूसरा संतुष्टि। कार्य का अर्थ है– अपनाया गया कोई व्यवसाय, जिसके लिए कार्य किया जाए और संतुष्टि का अर्थ है– संतोष या प्रसन्नता। अर्थात् अपने कार्य व व्यवसाय से प्राप्त होने वाले आनंद व संतोष को कार्य संतुष्टि कहा जा सकता है।

किसी भी व्यवसाय के किन–किन पक्षों से संतुष्टि प्राप्त होती है, यह समझना अत्यंत आवश्यक है। कार्य कई प्रकार के होते हैं, कोई व्यवसाय करता है तो कोई अन्य सेवाएं देता है। सरकार द्वारा प्राप्त हुई जिम्मेदारी को सरकारी सेवा तथा निजी संस्था द्वारा प्राप्त हुई जिम्मेदारी को गैर सरकारी सेवा माना जाता है। इन्हीं सेवाओं के अंतर्गत कार्य की उस सीमा को मापने का प्रयास करना आवश्यक है जिससे संतुष्टि का स्तर ज्ञात हो सके। मुख्यतः इसके दो आधार है। एक –व्यक्ति को उसकी प्रकृति या स्वभाव व रुचि के अनुसार कार्य मिला हो तथा दूसरा –अपने व्यवसाय से कम से कम इतनी आर्थिक सुविधाएं व वेतन मिलता हो ,जो उसे समाज में जीवन यापन के लिए आवश्यक है। कार्य

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

संतुष्टि को आयु, अनुभव, लिंग, कार्य के समय, समय सारणी, बुद्धि, क्षेत्र, शिक्षा, व्यक्तित्व व व्यक्तिगत क्षमताएं, आकांक्षा, मूल्य एवं आदर्श आदि घटक प्रभावित करते हैं।

सरकारी विद्यालय

वह संस्था जहां बालकों का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं नैतिक गुणों का विकास होता है, विद्यालय कहलाता है। सरकार द्वारा संचालित विद्यालयों को सरकारी विद्यालय कहा जाता है। सरकारी विद्यालयों से तात्पर्य उन विद्यालयों से है, जिनकी मान्यता बेसिक शिक्षा परिषद् द्वारा प्रदान की जाती है तथा उनका सम्पूर्ण वित्तीय वहन सरकार द्वारा किया जाता है तथा इनका व्यवस्थापन, प्रबन्धन, संचालन तथा पर्यवेक्षण भी सरकार द्वारा किया जाता है। अनुदानित विद्यालय भी इसी श्रेणी में आते हैं।

गैर सरकारी विद्यालय

वर्तमान अध्ययन में गैर–सरकारी विद्यालय शब्द से तात्पर्य संस्था पर समस्त नियंत्रण प्रबंध तंत्र या एनजीओ द्वारा होता है, ऐसे संस्था को गैर सरकारी विद्यालय कहते हैं। गैर सरकारी विद्यालयों से तात्पर्य मान्यता प्राप्त वित्तविहिन विद्यालयों से है ,जिनकी केवल मान्यता बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा दी जाती है लेकिन इनका वित्तीय भार, प्रबन्धन, शैक्षिक प्रशासन, व्यवस्थापन तथा संचालन निजी प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है।

उच्च प्राथमिक विद्यालय

उच्च विद्यालय से तात्पर्य उन विद्यालयों से हैं, जिनमें कक्षा 6 से 8 तक की कक्षाएं संचालित होती है। यह विद्यालय बेसिक शिक्षा परिषद के अधीन कार्य करती है। उच्च प्राथमिक शिक्षा प्रायः 11 से 14 आयु वर्ग के बच्चों के लिए होती है। उत्तर प्रदेश सरकार के पुनरीक्षित मानकों के अनुसार 800 तक की जनसंख्या वाले क्षेत्र में एक उच्च प्राथमिक विद्यालय होना चाहिए। दूसरे उच्च प्राथमिक विद्यालय की दूरी 2 किलोमीटर से अधिक नहीं होना चाहिए।

अध्ययन की आवश्यकता

सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना तथा यह जानने की कोशिश करना आवश्यक है कि इसके लिए कौन–कौन से कारक उत्तरदायी है, इनका पता लगाकर आवश्यक सुधार किया जा सके। वर्तमान अध्ययन हेतु इस संदर्भ में निम्नांकित उद्देश्य पर विचार किया जा सकता है –

- सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के स्तर ज्ञात करना।
- सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के स्तर ज्ञात करना।
- सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।
- सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।

सुझाव

शिक्षण प्रभावशीलता तथा कार्य संतुष्टि उन शिक्षण संस्थाओं में अच्छा है, जहां अध्यापकों की सेवा शर्तें सुरक्षित हैं। अध्यापक पेशा व्यवसायिक कार्यक्रम के रूप में जाना पहचाना जाता है। एक व्यक्ति के

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

अध्यापक बनने के बाद उससे अपेक्षा की जाती है कि अध्यापक स्वयं को सतत अद्यतन बनाए रखे। किसी भी शिक्षण संस्था की प्रगति हेतु शिक्षकों की शैक्षिक व्यवसायिक विकास शिक्षण प्रभावशीलता एवं कार्य संतुष्टि अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष होता है।

सामान्यतः शिक्षा व्यवस्था में सरकारी तथा गैर सरकारी शिक्षण संस्थाएं होती है। अर्थात् सरकारी श्रेणी के विद्यालयों के वेतन हेतु धन मुहैया सरकार कराती है ,साथ ही शिक्षकों कर्मचारियों की सेवा शर्तों में प्रतिबद्धता आदि निश्चित होती है। गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं में आधारभूत सुविधाएं शिक्षक एवं कर्मचारियों के वेतन भत्ते संस्था संचालित करने वाले समूह व्यक्ति द्वारा एवं सेवा शर्त सरकार द्वारा निर्धारित मापदंडानुसार व्यवस्थित होता है। अब प्रश्न यह है कि क्या सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा कार्य संतुष्टि में एकरूपता है या अलग–अलग है ? इस संदर्भ में अध्ययन करने की आवश्यकता है।

अतः शिक्षक संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का केंद्रक होता है, यदि वह चाहे तो अपने शिक्षण से महान व्यक्तित्व का विकास कर सकता है, जो केवल समाज के एक ही क्षेत्र के लिए नहीं बल्कि सभी क्षेत्रों के लिए आवश्यक है, इसके लिए उसे स्वयं को सकारात्मक भाव के साथ रहना होगा और यह जिम्मेदारी केवल एक शिक्षक की ही नहीं बल्कि समाज की भी है कि वह एक शिक्षक को अपने सकारात्मक विचारों के अंबर के नीचे रहने दे।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

गरेट, ई. हेनरी (1989); शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, नोएडाः कल्याणी पब्लिशर्स।

गुप्ता, एस.पी. (2006); आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।

अग्रवाल, आर.एन. (1987);मनोविज्ञान ज्ञान और शिक्षा में मापन एवं बी अस्थाना, मूल्यांकन, आगराः विनोद पुस्तक मंदिर।

कोठारी, सी.आर. (2004); रिसर्च मेथाडोलॉजी, नई दिल्लीःन्यू एज इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड पब्लिशर्स।

गुप्ता, उमेश (2010);आधुनिक भारतीय शिक्षा एक सर्वेक्षण, नई दिल्लीः इंडियन पब्लिशर्स डिस्टीब्यूटर्स।

पांडे, राम सकल एवं के.एस.मिश्रा (1990); भारतीय शिक्षा की ज्वलंत समस्याएं, इलाहाबादः वोहरा पब्लिशर्स एंड डिस्टीब्यूटर्स।

शेखर के (2001);प्राइमरी स्कूल टीचर्स एजुकेशन प्रोग्राम इन इवेलवेलिट स्टडी आफ डाइट, नई दिल्लीः डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस।

Best, John W. and J.V.Kahan (1986); Research in Education (fifteen Ed.). New Delhi: Prentice Hall of India Pvt. Ltd.

Vijaya Laxmi Ghali (2005); Teacher effectiveness and Job – Satisfaction of women teachers. Education track, Vol.4, No.7, pp.29-30

Tomar, S.K.(2015); A Study of Teacher effectiveness and job- Satisfaction and Secondary Schools, Indan Journal Of Resarch, Vol.4, Issue 6, ISSn – 1991 – PP95-96

Mathur, P& Khurana A. (1996); Teacher's perception of school climate and self actualization, Journal Of India Education, Vol. 22

Buch, M.B. (1992); Fourth survey of research in education, NCERT, New Delhi.

Singh, S.P. (1992); A comparative study of Mental Health Teaching Efficiency and Job satisfaction and Role Conflict among secondary school teachers. Ph.D. Education. Allahabad: University of Allahabad.

Mutha, D. N.; An Attitudinal and personality study of of Effectiveness Teacher. Ph.D. Psychology. Jodhpur: Jodhpur University..

Joshi, Harima L.; A comparative study of Job stress, Job involvement and Job satisfaction of B.Ed. teaching and B.Ed. Trained teacher of Rajkot Saurashtra Region of Gujarat State. Ph.D. Education.Rajkot: Saurashtra University.

Singh, Jayprakash(2013);Relationship between teaching complete and job satisfaction: A study among teacher educations working in self-financing in Uttar Pradesh, Indian Journal Applied Research vol 3:5

NCERT(2000); Fifth Survey of Educational Research, New Delhi, International Seminar on Teacher Effectiveness at Primary Stage

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

Digital sources(Internet Website); www.sodhganga.com,www.ncert.nic.in